कृष्णदास आयुर्वेद सीरीज १५४

रसशास्त्र एवं भैषज्यकल्पना श्लोकावली

लेखक

डा० गौरव कुमार शर्मा

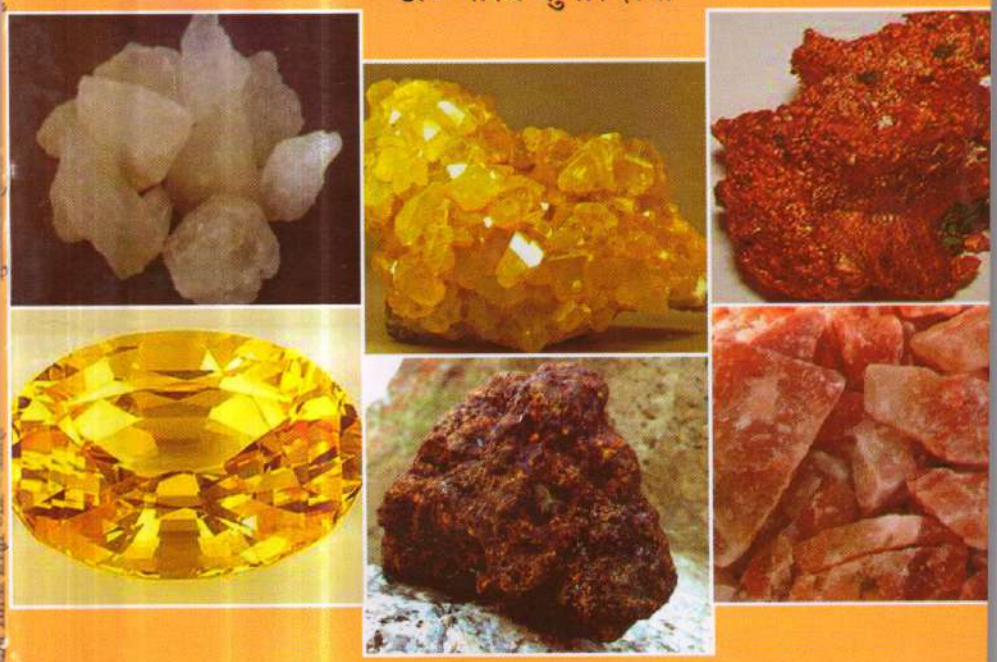

चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी

भल्लातक

डा० जी० के० शर्मा

भूतपूर्व प्रवक्ता, हिमालयीय आयुर्वेद कालेज, देहरादून (उत्तराखण्ड)
अगदतन्त्र एवं व्यवहारायुर्वेद विभाग

नाम- हिन्दी - भिलावा

संस्कृत-अरूष्कर, अग्निमुखी आदि

लैटिन नाम- Semecarpus Anacardium (सेमेकार्पस स्नाकर्डियम)

कुल- आम्रकुल (एनाकर्डिएसी-Anacarddiacear)

स्वरूप- वृक्ष (20 से 40 फीलऊंचा)

फल- 01 इंच लम्बा, हृदयाक्रति, चमकीले काले रंग का तथा चिकना होता है।

गुण धर्म

रस- मधुर, कषाय

गुण- लधु, स्निग्ध, तीक्ष्ण

वीर्य- उष्ण

विपाक- मधुर

गुण कर्म- वात कफ हर, बाजीकर, रसायन, मेध्य, मूत्रजन, कुष्ठघ्र, वृणोत्पादक

विषैला प्रभाव- (I मूत्र रेग-गहरा
(ii) शरीर में दाह
(iii) खुजली
(iv) आतिसार
(v) उन्माद इत्यादि लक्षण प्राये जाते है।

दोष चिकित्सा- नारियल या इमली की पत्ती का रस देते है।

मात्राः- तैल- 01 बूँद तक।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. अगद तंत्र- डा० अयोध्या प्रसाद अचल
2. अगद तंत्र- डा० एच० सी० गुप्ता
3. अगद तंत्र- डा० अशोक कुमार मिश्र
4. द्रव्य गुण- आचार्य प्रियव्रत शर्मा
5. A Text Book of Agada Tantra- Dr. Sekhar Namburi